अयोध्या एवं संत समाज (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

–राघवेन्द्र पाण्डेय एवं डॉ. अखिलेश कुमार त्रिपाठी*
शोधछात्र– समाजशास्त्र
***असि.प्रोफेसर : समाजशास्त्र**
टी.एन.पी.जी. कॉलेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर

भारत में जब भी सनातन धर्म की बात होता है तो संतों की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होता है। भारत में सनातन धर्म का जन्म हुआ और इस धर्म का एक ही सिद्धान्त है मनुष्य जीवन के साथ–साथ मुक्ति के मार्ग को भी अपनाए। यह कहना उचित होगा कि सनातन धर्म, संत परम्परा व संत की वजह से बची हुई है।

सनातन धर्म **' कर्म '** के सिद्धान्त का अनुपालन करता है। यह धर्म आत्मा और परमात्मा को आधार और अनिवार्य मानकर चलते हैं। और यह सब सिद्धान्त जिसके द्वारा समाज को बताया जाता है उसे सन्त कहते हैं। हिन्दू धर्म में सन्त उस व्यक्ति को कहते हैं जो सत्य आचरण करता है तथा आत्मज्ञानी है।

सन्त शब्द सत् शब्द के कर्त्ता कारक का बहुवचन है इसका अर्थ है– साधु , सन्यासी , विरक्त या त्यागी पुरूष या महात्मा।

या जग जीवन को है यहै फल जो छल छौड़ि भजै रघुराई।
शोधि के संत महतनहू पदमाकर बात यहै ठहराई।।

ईश्वर के भक्त या धार्मिक पुरूष को भी सन्त कहते हैं। साधुओं को परिभाषा में संत उस संप्रदायमुक्त साधु को कहते है जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो।

मत्स्यपुराण में विदित है कि ब्राह्मण ग्रंथ और वेदों के शब्द ये देवताओं की निर्देशिका मूर्तियां हैं जिनके अंतःकरण में इनके और ब्रह्म का संयोग बना रहता है वह संत कहलाते हैं।

सामान्यतः संत शब्द का प्रयोग प्रायः बुद्धिमान, पवित्रात्मा, सज्जन, परोपकारी, सदाचारी आदि के लिए प्रयोग किया जाता है। संत शब्द के शाब्दिक निर्वचन का प्रश्न है उस सन्दर्भ में संस्कृत के शब्द संत से जो निर्मित हुआ है और सत् का पुल्लिंग है जो त प्रत्यय के योग से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– होने वाला या रहने वाला।

जहां तक इस शब्द की व्युत्पत्ति का प्रश्न है कुछ लोग इसे शांत शब्द का रूपांतर मानते हैं तो कुछ अन्य इसे सन्ति या सत्य का रूप मानते हैं। यदि इस शब्द को अंग्रेजी शब्द सेन्ट का समानार्थी समझकर उसका हिन्दी रूपान्तर मानें तो Saint वस्तुतः लैटिन Sanico (पवित्र कर देना) के आधार पर निर्मित Sanctus शब्द से बनता है जिसका अर्थ पवित्र होता है।

संत से अभिप्राय है जिसे सत की अनुभुति हो गई है। संत हर प्रकार के हर स्तर पर उठे–उठाए गए विभाजनों को ढहाते–गिराते हैं। सब मानवों को सत्य की खुली भूमि पर लाते हैं। संत सत्य के शोधक होते हैं। समाज ही उनकी यथार्थ, कार्याशाला, प्रयोगभूमि होता है।

ऐसा कहा जाता है–

आग लगी आकाश में झर–झर पड़े अंगार।

संत न होते जगत में,जल जाता संसार।।

अयोध्या के संत समाज एक विस्तृत रूप हैं जो धर्म को एक रूप दिए हैं जिससे हमारे समाज के प्रति एक अच्छा नजरिया लोगों में देखने को मिला है। संत समाज का समाज पर एक गहरा प्रभाव पड़ा है।

श्रीरामचरितमानस की बालकाण्ड से–

साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू।।
जो सही दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिं जगज स पावा।।

संतों का चरित्र कपास के चरित्र (जीवन) के समान शुभ है, जिसका फल नीरस, विशद और गुणमय होता है। (कपास की डोडी नीरस होती है, संत–चरित्र में भी विषयासक्ति नहीं है, इससे वह भी नीरस हैं, कपास उज्जवल होता है, संत का ह्रदय भी अज्ञान और पाप रूपी अंधकार से रहित होता है इसलिए वह विशद है, और कपास में गुण (तन्तु) होते हैं, इसी प्रकार संत का चरित्र भी सदगुणों का भण्डार होता है, इसलिए वह गुणमय है। जैसे कपास का धागा सुई के किये हुए छेदों का अपना तन देकर ढक देता है, अथवा कपास जैसे लोढ़े जाने, काटे जाने और बुने जाने का कष्ट सहकर भी वस्तु के रूप में परिणत होकर दूसरों को गोपनीय स्थानों को ढकता है, उसी प्रकार संत स्वयं दुख सहकर दूसरों के छिद्रों (दोषों) को ढकता है, जिसके कारण उसने जगत् में वन्दनीय यश प्राप्त किया है।

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जगज ंगम तीरथराजू।।

संतों का समाज आनन्द और कल्याणमय है, जो जगत् में चलता–फिरता तीर्थराज प्रयाग है।

अरण्यकाण्ड से संतों के लक्षण और सत्यसंग–

पर बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा।।
अमित बोध अनीह मितभोगी। सत्यसार कबि कोविद जोगी।।

वे संत काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर छः विकारों (दोषों) को जीते हुए, पापरहित, कामनारहित, निश्चल, सर्वत्यागी, बाहर–भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ कवि, विद्वान, योगी। श्रीराम जी ने नारद जी से कहा, संतों के जितने गुण हैं, उनको सरस्वती और वेद भी नहीं कह सकते।

भारतीय संत भारत के प्राचीनकाल से आज तक के सभी संतों का नाम आता है। जो ईश्वर की भावनाएं होती हैं, जो ईश्वर की स्थापनाएं होती हैं, जो ईश्वर के सारे उद्देश्य होते हैं, ईश्वर जिन भावनाओं से जुड़ा होता है, जिन गुणों से जुड़ा होता है, वो सब संतों में होती है। संत जीवन में समाज भी यही खोजता है कि संत में लोभ नहीं हो, कामना–हीनता हो।

संत समाज में हर सम्प्रदाय की पहचान उसका तिलक होता है– हिन्दू धर्म के अनुसार तिलक माथे पर या शरीर के अन्य हिस्सों जैसे हथेली या गर्दन पर लगाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का चिन्ह होता है, तिलक किसी मेहमान के स्वागत सत्कार व सम्मान के रूप में भी लगाया जाता है। साधु संतों की पहचान उनके लगाए हुए तिलक से होती है, हमारी संस्कृति में तिलक लगाने की परम्परा आज की नहीं है यह परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है, हिन्दू संस्कृति की पहचान माने जाते हैं से तिलक, यह तिलक 80 प्रकार से भी ज्यादा प्रकार के

होते हैं, सबसे ज्यादा 64 प्रकार के तिलक वैष्णव संतों में लगाये जाते हैं, हिन्दू धर्म में जितने भी संतों के पंथ, मत व सम्प्रदाय हैं, उन सभी के अलग–अलग तिलक होते हैं।

शैव :–

शैव तिलक में ललाट पर चंदन की तिरछी रेखा बनाई जाती है, इसके अलावा त्रिपुंड भी लगाया जाता है, लगभग सभी शैव संत इसी प्रकार का तिलक लगाते हैं।

शाक्त :–

जो साधु शक्ति की आराधना करने वाले होते हैं वह कुमकुम या चंदन का तिलक न लगाकर सिंदूर का तिलक लगाते हैं, मान्यता है कि सिंदूर से साधक की शक्ति बढ़ती है और यह उग्र का भी प्रतीक होता है, जानकारी के अनुसार ज्यादातर आराधक तिलक लगाने के लिए कामाख्या देवी के सिद्ध सिंदूर का प्रयोग करते हैं।

वैष्णव :–

वैष्णवों में तिलक लगाने के सबसे ज्यादा प्रकार मिलते हैं, वैष्णवों में तकरीबन 64 प्रकार के तिलक लगाये जाते हैं, उनमें से कुछ प्रमुख तिलक निम्न प्रकार से हैं–

- लालश्री तिलक, इस तिलक के आसपास चंदन का तिलक लगाकर उसके बीच में हल्दी या कुमकुम की रेखा बनाई जाती है।
- विष्णु स्वामी तिलक, अपने माथे पर इस तिलक को लगाने के लिये भौंहों के बीच में दो चौड़ी रेखाएं बनाई जाती हैं।
- रामानन्द तिलक, इस तिलक से पहले विष्णु तिलक लगाया जाता है इसके बाद उनके बीच में कुमकुम से एक खड़ी रेखा बनाई जाती है।
- श्यामश्री तिलक, भगवान श्री कृष्ण के उपासक श्यामश्री लितक लगाते हैं, इस तिलक को लगाने के लिये आसपास गोपीचंदन की व बीच में एक काले रंग की मोटी रेखा बनाई जाती है।
- अन्य तिलक, इस सबके अलावा भी और भी प्रमुख तिलक हैं जो केवल संत लोग लगाते हैं, बहुत से साधु– संत भस्म का तिलक लगाते हैं।

मान्यता है कि तिलक वैष्णवों और शैवों में एकता का भी प्रतीक माना जाता है, माना जाता है कि वैष्णव भगवान शंकर का त्रिशूल रूप में मस्तक पर लगाया जाता है और शैव सम्प्रदाय के लोग भगवान श्रीराम के धनुष को तिलक के रूप में धारण करते हैं।

शाक्त सम्प्रदाय के उपासक श्री कापालिक महाकाल भैरवानन्द सरस्वती जी का यह कहना है कि भारतीय स्त्रियों के लिये उनका सुहाग की सर्वप्रथम, सर्वोच्च होता है। महिलायें सुहाग की निशानी के लिये अपनी मांग लाल रंग की रोली से भरती हैं वैसे ही हम लोग लाल रंग का तिलक एक सीधी खड़ी लकीर के रूप में लगाते हैं, कहते हैं जो यह तिलक लगाता है वह कभी अभागा नहीं होता ।

भक्ति और पूजा का एक प्रमुख अंग है तिलक, भारतीय संस्कृति में संस्कार विधि, पूजा–अर्चना, यात्रा, गमन, मंगलकार्य जैसे शुभ कार्यों के प्रारम्भ में ही माथे पर तिलक लगाकर अक्षत से विभूषित करते हैं यह तिलक मस्तक पर दोनों भौहों के बीच नासिका के ऊपर प्रारंभिक स्थल पर लगाये जाते हैं यह हमारे चिंतन मनन का स्थान होता है।

भारत में आधुनिकीकरण संक्रमण की स्थिति से गुजर रहा है, जिसके चलते लोग सनातन हिन्दू धर्म व संत समाज के प्रति अपना नजरिया बदल रहे हैं जिसका प्रभाव समाज पर पड़ रहा है। भारतीय समाज आधुनिक के नाम पर पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करते हुए दिखाई पड़ता है, भौतिकता की अन्धी दौड़ में लोगों में नैतिकता और राष्ट्रीय चरित्र का पतन भी हुआ है। अयोध्या संतों की नगरी कही जाती है जहां हर सम्प्रदाय के संत हैं जो अयोध्या को और इस देश को सनातन हिन्दू धर्म से परिचित कराते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा, डॉ. ओम प्रकाश. (1965). सन्त साहित्य की लौकिक पृष्ठभूमि. प्रयागाराज: हिन्दुस्तानी ऐकेडमी इलाहाबाद.
- महाराज, नृत्यगोपाल. दास. (1996). श्री गुरूदेव रश्मि. अयोध्या: श्रीसीताराम नाम बैंक.
- वंशी, बलदेव. (2012). भारतीय संत परंपरा. नई दिल्ली: किताबघर.
- लाल, जालान. मोती. (1982). कल्याण : वामन पुराणांक. गाोरखपुर: गीताप्रेस.
- योगानन्द. परमहंस. (2006). योगीः कथामृत. डायमण्ड पॉकेट बुक्स.
- पोददार. हनुमानप्रसाद. (2014). श्रीरामचरितमानस. गाोरखपुर: गीताप्रेस.
- गोयन्दका, जयदयाल. (2017). श्रीमद्भागवतगीता. गाोरखपुर: गीताप्रेस.
- शर्मा,चतुर्वेदी .द्वारकाप्रसाद. (1950). श्रीबाल्मिकी रामायण. प्रयागराज: रामायण लाल.
- विवेकानन्द,स्वामी. (1941). भगवान रामकृष्ण धर्म तथा संघ. नागपुर: स्वामी भास्करेश्वरानन्द.
- महाराज,करपात्री स्वामी. (2001). रामायणमीमांसा. मथुरा: राधकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान.
- त्रिपाठी, डॉ..योगेन्द्र त्रिपाठी. (2021, दिसम्बर). आधुनिक भारतीय परिवेश में परम्परा एवं परिवर्तन. Humanities And Development, 52.57.